

भीष्म साहनी के साहित्य में नारी-चेतना: पारिवारिक सन्दर्भ

Promila^{1*} Dr. Govind Dwivedi²

¹ PhD Scholar, Department of Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

² Research Director, Assistant Professor, Department of Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

सार - नारी हमेशा से ही पुरुष की प्रेरणा रही है। नारी का शारीरिक सौन्दर्य अगर पुरुष को लुभाता है। इसकी शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति करता है तो नारी का आत्मिक सौन्दर्य पुरुष के कार्यों की प्रेरणा भी बनता है। नारी पुरुष को निराशा के क्षणों में आशा देती है, दुःख में दिलासा देती है और उसके कर्म में उत्साह भरती है।

-----X-----

1. परिवार का अर्थ एवं स्वरूप:

परिवार समाज की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है। मनुष्य का जन्म परिवार में होता है तथा परिवार में ही वह पला-बड़ा अर्थात् पालन-पोषण होता है। एक सुखी परिवार का निर्माण-अच्छी स्त्री, आज्ञाकारी पुत्र तथा परिश्रमी व्यक्ति के द्वारा होता है। साधारण शब्दों में, 'माता-पिता और सन्तान, उनके योग से ही 'परिवार' बना है।' ¹ परिवार की वृद्धि के साथ-साथ परिवार में भी उसके सदस्य अपने-अपने कर्तव्यों को समझते हैं और उनका पालन करते हुए निर्धारित कार्यों को कहते हैं। डॉ. ज्ञानवती अरोड़ा के अनुसार, 'परिवार मानव समाज की प्राचीनतम एवं महत्त्वपूर्ण संस्था है। परिवार सामाजिक जीवन की प्रारम्भिक इकाई है। परिवार के क्रमशः विकास के साथ ही सामाजिक सम्बन्धों का विकास होता है।' ²

परिवार के सदस्यों में माता-पिता मुख्य सदस्य होते हैं। वे परिवार के आधार-बिन्दु हैं। अपने बच्चों के प्रति कर्तव्यों को पूरा करने में वे सदैव लगे रहते हैं। परिवार में नारी का दोहरा दायित्व होता है। वह दो कुलों की मान-मर्यादा तथा रक्षा करने में सक्षम मानी जाती है। 'आधुनिक परिवार में चाहे कुछ भी हो, परन्तु परिवार में नारी के महत्त्व को स्वीकारा है।' ³

नारी जब माता-पिता के घर होती है तो वहाँ की मर्यादा का ध्यान करके अपने प्रेम-भाव को परिवार के प्रति समर्पित कर देती है और जब वह ससुराल में होती है तो पति के घर-परिवार की वंश-

वृद्धि करके अपने नारीत्व का प्रमाण देती है। सामान्य रूप से परिवार दो रूप के होते हैं-

एकांगी परिवार: इस प्रकार के परिवार में केवल पति-पत्नी तथा उनके बच्चे ही सम्मिलित होते हैं। ऐसे परिवारों की संख्या आधुनिक समाज में अधिक पाई जाती है। कहा भी गया है कि 'छोटा परिवार, सुख का आधार' और 'छोटा परिवार, सुखी परिवार'। परिवार का वास्तविक आधार गृहस्थाश्रम है। परिवार के साथ-साथ समाज भी गृहस्थाश्रम पर आश्रित है।

संयुक्त परिवार: इसके अंतर्गत समस्त परिवार के सदस्य जैसे-दादा-दादी, चाचा-चाची, ताऊ-ताई, माता-पिता, भाई-बहन सभी सम्मिलित होते हैं। डॉ. आच्युतानंद जी ने अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है, 'एक परिवार, एक विचार, एक ध्येय और एकता की भावना से एकत्रित होकर एक ही स्थान पर एक ही पूर्वज के वंशज निवास कर सभी अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं और उन परस्पर घनिष्ठ खून का सम्बन्ध हो एवं जिनका दुःख-सुख संयुक्त रूप से जिसमें सन्निहित हो, उस संगठित परिवार को ही संयुक्त परिवार कहते हैं।' ⁴ एक अन्य विद्वान का मानना है कि संयुक्त परिवार उन लोगों का समूह है जो प्रायः एक ही घर में निवास करते हैं और जो एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, जिनका सम्पत्ति पर भी समान अधिकार हो, जो एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करते हैं।

भीष्म साहनी जी ने अपने साहित्य में एकांगी परिवार और संयुक्त परिवार दोनों का ही वर्णन किया गया है। नारी के बिना परिवार नहीं चल सकते। साहनी जी के साहित्य में पारिवारिक चेतना में नारी की भूमिका का वर्णन अग्रलिखित है।

2. एकांगी परिवार एवं नारी:

परिवार बच्चों के पालन-पोषण, संस्कार, आचार-व्यवहार आदि का आधार होता है। इसके द्वारा समाज की सांस्कृतिक विरासत एक से दूसरी पीढ़ी को प्रसारित होती है। व्यक्ति की सामाजिक मर्यादा बहुत कुछ परिवार से ही निर्धारित होती है। एकांगी परिवार में नारी की मानसिकता के दो पहलू हैं। एक तो वह अपने पति और बच्चों के साथ खुश रहती है और दूसरा पक्ष ये है कि नारी पति से तंग आकर खुद को इस संसार में तन्हा समझती है। साहनी जी ने अपने साहित्य में इन दोनों पहलुओं का वर्णन किया है। 'पाप-पुण्य' कहानी में पत्नी अपने बच्चों से बहुत प्यार करती है परन्तु पति अपने बच्चों को सदाचार की बातें सिखाते हैं। जब वह बच्चों को पीटते एवं धमकाते हैं तो श्रीमती जी को बड़ा दुःख होता है। वह अपने बच्चों का पक्ष लेती हुई कहती है, 'अभी हैं कितने से? बड़े होंगे अपने आप सीख लेंगे। जो सिखाते हैं यूँ पीछे थोड़े पड़ जाते हैं जैसे तुम करते हो।... चार वर्ष की बच्ची है, उतार देती है, मैं कहाँ उसके पीछे-पीछे भागती फिरूँ। क्या हुआ जो चट्टी उतर गई?'⁵ श्रीमती जी एकांगी परिवार की महिला है, घर में उनके पति की ही अधिक चलती है। 'फूलों' कहानी में फूला और उसका पति अकेले रहते हैं। घर में अगर कोई दूसरा है तो वह माणों है। फूला घर में तन्हा-तन्हा महसूस करती है। देख वीरां, मैं मोह की मारी, उसके लिए क्या-क्या बनाती पिफरी। जो मैं जानती वह यूँ बिछोड़ा दे जाएगी तो मैं क्यों उसके लिए इतना कुछ करती?'⁶ एकांगी परिवार के कारण फूलां घर में घुटन महसूस करती है। 'पिकनिक' कहानी में दिखाया गया है कि एकांगी परिवार में बच्चे मानसिक विकास तो हो जाता है परन्तु शारीरिक रूप से बहुत कम बच्चे स्वस्थ रहते हैं। उनका ध्यान भी बहुत अधिक रखा जाता है। वकील की पत्नी बेटे को खाना खिलाती हैं। 'तुझे तो भूख ही नहीं लगती। बात-बात पर नखरे करता है, यह नहीं खाऊँगा, वह नहीं खाऊँगा। गरीबों को देख तो लगता है जैसे पिकनिक कर रहे हैं।'⁷ वह अपने बच्चे को बहुत समझाती है, परन्तु बच्चा बहुत नखरा करता है। 'गंगो का जाया' कहानी में गंगो एकांगी परिवार में रहते हुए बहुत दुःखी है। वह गर्भवती होते हुए भी मजदूरी करती है। अपने परिवार का पालन-पोषण वह स्वयं करती है, 'सोमवार को गंगो काम पर से बर्खास्त हुई और सनीचर तक पहुंचते-पहुंचते झोंपड़ी की गृहस्थी डावांडोल हो गई। माँ, बाप और बेटा तीन जीव खाने वाले और कमाने वाला केवल एक।'⁸ एकांगी परिवार की नारी जागृत है जो अपने घर का चलाने के लिए स्वयं कार्य करती है।

एकांगी परिवार में बच्चे का ध्यान तो पूरा रखा ही जाता है। साथ ही साथ नारी पर किसी का इतना अधिक दबाव नहीं होता कि तुम्हें ये करना है या ये नहीं करना। वे स्वतंत्र होती हैं। 'खिलौने' कहानी में ये कहा गया है, 'पप्पू अब कोई दूध-पीता बच्चा तो नहीं है ना, बड़ा हो गया है और धीरे-धीरे और भी बड़ा होता जायेगा। अब पप्पू की वजह से कैरियर को ताक पर तो नहीं रखा जा सकता ना। यही दिन है जब कुछ किया-कराया जा सकता है।'⁹ 'अपने-अपने बच्चे' कहानी में वकील और उसकी पत्नी अपने बच्चे के साथ अपने घर में पूरी तरह से खुश हैं। वकील की पत्नी अपने बेटे को ढेर सारा प्यार करती है। उसकी हर बात का पूरा-पूरा ध्यान रखती है। 'और मालकिन बेबी के पानी सने कपड़ों में बेबी का बदन बार-बार टटोल-टटोलकर देख रही थी कि कहीं चोट तो नहीं आयी।'¹⁰ वकील की पत्नी को बाहरी किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं करती, बस उसका कार्य एक गृहस्थी नारी का है जिसमें वह बहुत खुश रहती है। 'पाली' कहानी-संग्रह में मनोहरलाल की पत्नी अपने बच्चे से बिछुड़ जाती है। एकांगी परिवार में पहले ही कुल चार सदस्य थे। उनमें से भी उसका बेटा 'पाली' हिन्दुस्तान बंटवारे में बिछुड़ जाता है।

एकांगी परिवार में वह बहुत दुःखी है। मनोहरलाल अपनी पत्नी की हालत का वर्णन करते हुए कहता है, 'जब वह दिन-भर की खाक छान चुकने पर घर लौटता और उसकी नीम-पागल पत्नी गुम-सुम बैठी मिलती या रात को सोए-साए कुरलाने लगती या चीखने-चिल्लाने लगती तो उसका साहस चुक जाता।'¹¹ मनोहरलाल की पत्नी बेटे से जुदा होकर ऐसी हालत में पहुंच जाती है कि उसके पागल होने का खतरा तक हो जाता है। 'कड़ियाँ' उपन्यास एकांगी परिवार पर ही आधारित है। प्रमिला, महेन्द्र और पप्पू घर के तीन ही सदस्य हैं। प्रमिला के साथ महेन्द्र दुर्व्यवहार करता है। उसका सुषमा नामक लड़की के साथ नाजायग सम्बन्ध है, जिसके कारण वह अपनी पत्नी प्रमिला की भी पिटाई कर देता है। प्रमिला महेन्द्र को कहती है, 'इस घर पर कहर टूटेगा। तुम अपनी पत्नी को मारते हो। हमारे घर में मेरी माँ कभी नहीं रोई। तुम बहुत बुरे आदमी हो। तुमने बच्चे के सामने मुझे पीटा है, बच्चा क्या सीखेगा।... भगवान् तुम्हें सजा देगे, तुम अपनी घरवाली को तड़पाते हो, भगवान् तुम्हें कभी माफ नहीं करेंगे। वे सब कुछ देखते हैं, उनकी आँखें सब कुछ देखती हैं।'¹² प्रमिला के दुःख कारण यह भी है कि महेन्द्र को समझाने वाला बड़ा कोई घर में नहीं था। सभी एकांगी परिवारों में इस प्रकार की समस्या होती है।

3. संयुक्त परिवार और नारी:

आज के युग में संयुक्त परिवार बहुत ही कम मिलते हैं। वेदों के अध्ययन करने पर सर्वत्र सहयोग, सम्मिलित कार्य करने,

एकत्रित रहने और तेजस्वी होने के अनेक उदाहरण मिलते हैं। शीघ्रता से कार्य करने तथा सुगमता से सम्पन्न होने से संयुक्त शक्ति का विशेष महत्त्व है। 'तुम्हारा कर्म समान हो, तुम्हारे हृदय और मन भी समान हो, तुम एक मत होकर सब प्रकार से संगठित हो जाओ।' 13 इसके सिर पर परिवार के मुख्य सदस्यों का हाथ होता है। हर कार्य करने से पहले से उसे इनकी इजाजत लेनी पड़ती है। कई बार संयुक्त परिवारों में सभी नारियों की देखभाल उचित प्रकार से नहीं हो पाती और वे मन ही मन में प्रताड़ित होती रहती हैं। 'चीफ की दावत' कहानी में शामनाथ की माँ, शामनाथ और उसकी पत्नी के लिए समस्या बन गई है। वे उसे घर में भी नहीं रखना चाहते। पत्नी समस्या का हल करती हुई कहती है, 'फुड़न्हे पिछवाड़े इनकी सहेली के घर भेज दो। रात-भर बेशक वहीं रहे। कल आ जाएँ।' 14 संयुक्त परिवार में रहने के कारण माँ दोनों के लिए समस्या बन गई। 'भाग्य रेखा' कहानी संग्रह में सुनंदा को संयुक्त परिवार में दिखाया गया है। जिस पर स्वयं की स्वतंत्रता की बंदिशें हैं। वह स्वयं किसी कार्य को करने का निर्णय नहीं ले सकती थी। वर्णन है- 'सुनंदा धीरे-धीरे कांपते हुए पाँव से पड़े के नीचे आ खड़ी हुई-उसी तरह व्याकुल जैसे कभी बड़े भाई की बहू खड़ी हुई थी, जैसे तीसरे भाई की बहू अपने पति से दुत्कारी हुई, जो रोज शराब पीकर घर लौटता था और किसी पर-स्त्री से प्रेम करने लग गया था, खड़ी हुआ करती थी। वह वृक्ष उन सब घटनाओं का साक्षी था। मूक और वृद्ध उसने एक के बाद दूसरी चार युवतियों की चंचलता की आहूति इस संयुक्त परिवार के होम में पड़ते देखी थी और आज पांचवीं का अभिनय देख रहा था।' 15

'घर की इज्जत' कहानी में संयुक्त परिवारों में हो रही नारी-दुर्दशा का वर्णन और फिर उसी से प्रेरणा लेकर जागरूक भी होती है। वह सुनंदा के रूप में स्वयं निर्णय भी लेने लगती है। 'लीला नंदलाल की' कहानी में जब स्कूटर गुम हो जाता है तो संयुक्त परिवार की महिलाओं के कथन अलग-अलग होते हैं और जब स्कूटर प्राप्त होता है तो उनकी प्रतिक्रिया अलग-अलग थी। 'माँ ने कहा, 'भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं। मैंने पहले ही कहा था कि मेरे बेटे का स्कूटर मिल जायेगा।' पत्नी भी चहक उठी। उसने मेरी ओर यों देखा जैसे उसकी नजर में फिर मेरी कीमत कुछ-कुछ बहाल होने लगी है।' 16 स्कूटर के विषय में चाची जी भी अपने विचार रखती हैं। 'खून का रिश्ता' कहानी में नारी संयुक्त परिवार में रहती हुई आपस में प्यार-प्रेम रखने की सलाह देती है। व्यावहारिकता का उसे पूरा ज्ञान है। समाज में रहते हुए व्यावहारिक ज्ञान अवश्य होना चाहिए। पंक्तियाँ हैं, 'चैके के ऐन बीच में वीरजी और मनोरमा, भाई-बहन, एक साथ, एक ही थाली में खाना खा रहे थे। माँ जी चूल्हे के सामने बैठी परांठे सेंक रही थी। माँ बेटे को समझा रही थी, यही मौके खुशी के होते हैं, बेटा!

कोई पैसे का भूखा नहीं होता। अकेले तुम्हारे पिता जी सगाई डलवाने जाएंगे तो समधी भी इसे अपना अपमान समझेंगे।' 17 'आवाजें' कहानी में वर्णन है कि संयुक्त परिवार में रहते हुए अक्सर नारियों का झगड़ा होता रहता है। सास-बहू की कहा-सुनी होना तो प्राचीन परम्परा है। सास अपनी बहू को उसके मायके के ताने देती हैं जबकि बहू भी सास को बुरा-भला कहती हैं। जैसे- 'इतने ही बड़े रोज-रजवाड़े थे तेरे माँ-बाप, तो दहेज में दो भैंस ही दे देते। . . . किसी के घर में भैंस बांधने की जगह होती तो वे भैंस भी भेज देते।' 18 इस प्रकार से सास-बहू में झगड़ा चलता रहता है। संयुक्त परिवार में नारी को मान-सम्मान भी दिया जाता था। कुंतो उपन्यास में ये वर्णन है, 'बाबू जी के चले जाने के बाद घर का सांझा खर्च चलाने के लिए घर के सभी भाईयों के सहयोग की जरूरत थी। प्रोफेस्साब ने इसकी व्यवस्था बड़े सलीके से कर दी। प्रोफेस्साब के मौजूद रहते भाभो के प्रति कोई बेरुखी भी नहीं कर सकता था। परिवार की बहुओं को कहीं बिरादरी में जाना होता तो भाभो ही, बड़ी बहू के नाते, घर की मुखिया बनकर जाती।' 19 संयुक्त परिवार में नारी-सम्मान के साथ-साथ नारी की दुर्दशा भी होती है। वो खुद को इतना असहाय एवं लाचार महसूस कहती है कि वह आत्महत्या तक कर लेती है। थुलथुल की माँ कहती है, 'दिल जलता था, उसी भाँति जिस भाँति धू-धू करती आग में बिटिया जल मरी थी, पर मुंह बंद था। कोई कहे भी तो क्या कहे? इस हरामजादे ने मेरी बेटी को मार डाला। तिल-तिल कर मरी बेचारी। जब दिल की व्याकुलता असह्य होने लगती तो दिल से ही सांत्वना के शब्द भी निकलते-चलो, इस सांसत से तो छुटकारा पा गई।' 20 इस प्रकार संयुक्त परिवार में नारी को खुशी और गम दोनों मिलते हैं। 'मययायदास की माड़ी' उपन्यास में रुक्मणी संयुक्त परिवार में रहती हुई परेशान है। आखिरकार वह स्कूल में पढ़ने जाती है परन्तु परिवार वाले इसका विरोध करते हैं। रुक्मणी हार नहीं मानती, वह अपने फैसले पर अडिग रहती है। अन्त में उसकी जीत होती है और शाही रंगदान पालकी में बैठकर स्कूल जाती है। 21 इस प्रकार हम देखते हैं कि साहनी जी ने अपने साहित्य में नारी का संयुक्त परिवार में एक स्पष्ट चित्रण किया है। वह संयुक्त परिवार में रहती हुई खुश भी रहती है, दुःखों का सामना भी करना पड़ता है। साथ ही साथ परिवार की जिम्मेदारी का दायित्व भी निभाती है।

4. पति-पत्नी सम्बन्ध:

परिवार में मुख्यतः पति पत्नी होते हैं। इनके बिना परिवार की कल्पना नहीं की जा सकती। इन्हीं के प्रेम-पूर्वक मिलन से परिवार बनता है। साहनी जी ने अपने साहित्य में पति-पत्नी सम्बन्धों को विशेष स्थान दिया है। पति-पत्नी के सम्बन्धों में

किस प्रकार से निकटता, प्यार-प्रेम बढ़ता है, इसका वर्णन तो किया ही है, साथ-ही-साथ पति-पत्नी के सम्बन्धों में बिखराव किस प्रकार आता है इसका वर्णन भी अपने साहित्य में किया है। 'रानी मेहतो' कहानी पति-पत्नी सम्बन्धों पर ही आधारित है। रानी राजा की खुशी की खातिर हर प्रकार का ऐशो-आराम त्याग देती है। जिस तरह से राजा दाल-रोटी खाकर खुश था, उसी प्रकार रानी भी खुश रहती थी। परन्तु अचानक आभूषण-प्रेम दोनों के बीच में दूरी बना देता है। परन्तु वे एक-दूसरे से बहुत-अधिक प्रेम करते थे। 'राजा की देह शान्त हो चुकी थी, उसके होंठ अब भी पानी की बूंद के लिए खुले पड़े थे और पथराई आंखें झोपड़ों की छत को ताक रही थी। रानी वहीं मूर्छित होकर गिर पड़ी। कहते हैं, राजा मर गया और रानी वियोग में पागल हो गई।'22 जब परिवार में पति कामचोर हो, कुछ कमाता न हो तो पति-पत्नी सम्बन्ध में बिखराव होने लगता है। यहाँ तक पत्नी को मेहनत-मजदूरी करनी पड़ती है, ताकि घर का चूल्हा जल सके। 'पिकनिक' कहानी में गौरी मेहनत-मजदूरी करती है। उसका अपने पति से झगड़ा होता रहता है, फ्राशन के पैसे दे दूँ तो बच्चों को क्या खिलाऊँगी? इसे तो चाट लगी है ढाबे पर खाना खाने की। कहता है घर में घुसने नहीं दूँगा। घर हैं कहाँ जिसमें घुसने नहीं देगा? एक सड़ी हुई कोठरी है, सदी-गर्मी बच्चों को लेकर बाहर सोती हूँ।'23 कई परिवारों में तो पत्नी की चलती है, वह जो कुछ कहती है सर्वमान्य होता है। यहाँ तक पति उसके सामने अधिक कुछ नहीं कह सकता। ऐसा ही 'शिष्टाचार' कहानी में दिखाया गया है। वर्णन है, 'यूँ भी घर में उनकी हुकूमत थी। जो उन्हें पतिदेव पर गुस्सा आता तो अंग्रेजी में बात करती और जो नौकर पर गुस्सा आता तो गालियों में बात करती। दोनों की लगाम खींच कर रखती है।'24 साहनी जी के साहित्य में पति-पत्नी के इस प्रकार के सम्बन्धों का भी वर्णन है। 'लीला नंदलाल की' कहानी में पत्नी अपने पति के प्रति खुश नहीं है। उसे अपने पति से शिकायत रहती है और कहती है, 'जब से तुम्हारे घर में आयी हूँ, मेरी हालत बद से बदतर होती रहती है और फिर सिर-दर्द का बहाना करके मेरी ओर पीठ फेर ली।'25 'एक रोमांटिक कहानी' में रुक्मणी का विवाह पागल के साथ हो जाता है। वह चाहती है कि उसका पति ठीक हो जाए। इसके लिए उसको इलाज करने के लिए भेज देती है। उसकी स्थिति देखकर महसूस किया जा सकता है कि वह अपने पति से कितना प्यार करती है। 'जब से रुक्मणी उसे छोड़कर लौटी थी और अपनी कोठरी में कदम रखा था, उसी दिन से उसका मन उदास हो गया था। जीवन में पहली बार अब वह अपने को निराश्रित और अकेली महसूस करने लगी थी।'26 कई बार पति-पत्नी के सम्बन्ध केवल पति-पत्नी के न होकर बल्कि एक अच्छे दोस्त भी बन जाते हैं। पति खुश रहता है तो पत्नी रहती है। पति के सुख-दुःख में ही पत्नी का सुख-दुःख निहित होता है। 'दिवास्वप्न' कहानी की पंक्तियाँ हैं, 'कुछ दिन तक तो पत्नी भी खोयी-खोयी सी रही थी, पर फिर, मेरी आंखों में आत्मविश्वास झलकता देखकर वह भी

हंसने-चहकने लगी। मेरी तरह, उसने भी कंधे पर झोला लटका लिया और मेरी साथिन बन गयी। हम जहाँ मन आता, निकल जाते, न खाने की फिक्र रहती है, न ओढ़ने-पहनने की'27 इस प्रकार पत्नी अपने पति की एक अच्छी दोस्त भी होती है।

भीष्म साहनी जी का 'कड़ियाँ' उपन्यास पति-पत्नी सम्बन्धों में आ रहे बिखराव पर आधारित है। पति-पत्नी के सम्बन्धों में बिखराव का कारण पति का किसी अन्य लड़की के साथ नाजायज सम्बन्ध है। महेन्द्र के सुषमा के साथ सम्बन्ध है जो उसको पत्नी प्रमिला से दूर कर देते हैं। महेन्द्र और प्रमिला एक-दूसरे के बीच अमिट दूरी महसूस करते हैं। यहाँ तक कि उनका परिवार टूट जाता है। महेन्द्र से दुःखी होकर वह अलग रहने लगती है और कहती है, 'प्रेम क्या होता है? मुझे तुम्हारा प्रेम नहीं चाहिए। मैं अपने बेटे के साथ अपने घर में रहना चाहती हूँ।' प्रमिला बिफरकर बोली, फतुम जाओ जिसके पास जाना चाहते हो, मुझे कुछ लेना-देना नहीं है।'28 'कुंतो' उपन्यास में पति-पत्नी सम्बन्धों का विस्तृत वर्णन है। 'कुंतो-जयदेव', सुषमा-गिरीश के साथ-साथ धनराज-थुलथुल के सम्बन्धों का भी वर्णन है। कुंतो और जयदेव के पारिवारिक सम्बन्ध अच्छे हैं। दोनों एक-दूसरे की इच्छाओं, भावनाओं को समझते हैं। एक-दूसरे को खुश देखना चाहते हैं। जबकि सुषमा-गिरीश के सम्बन्धों में सुषमा गिरीश की खुशी की खातिर स्वयं को उसके अनुरूप ढालती है। गिरीश अपनी मनमानी करता है और सुषमा की खुशियों की तरफ कोई खास ध्यान नहीं देते।

परन्तु कई बार ऐसा होता है कि पारिवारिक सम्बन्धों में पति-पत्नी के सम्बन्धों में इतना मन-मुटाव आ जाता है कि जिन्दगी भी बोझ लगने लगती है। ऐसा ही कुछ थुलथुल के साथ होता है। वह धनराज से तंग आकर आत्महत्या कर लेती है।29 अधिकतर परिवारों में पत्नी पति के खाना खाने के बाद ही खाना खाती है। वे इसे अपना धर्म मानती है। इससे दोनों में प्यार-प्रेम बढ़ता है। 'तमस' उपन्यास में कुछ ऐसा ही वर्णन है। जब तक नत्थु घर नहीं आता उसकी पत्नी उसका इंतजार करती है। नत्थु के पूछने पर कि तुमने खाना खा लिया, तो पत्नी कहती है, फहमने बनाया था, पर हमसे खाया नहीं गया।'30 पति-पत्नी का मिलन शारीरिक मिलन न होकर बल्कि आत्मा का मिलन होता है। पति-पत्नी की आत्मा एक हो जाती है। ऐसा ही कुछ वर्णन है। 'मययायदास की माड़ी' उपन्यास में रुक्मणी का पति पागल होता है परन्तु रुक्मणी अपने पति से बहुत प्यार करती थी। 'आंगन के बाहर निकलने पर रुक्मणी की आंखें बरबस पगलैट को ही खोजने लगती थी। उसे वहाँ पर पाकर अपार सुख का भास होता। दोनों के बीच शारीरिक स्तर पर असमानता रहने पर भी दोनों की आत्मा एक-दूसरी में गुंथ गई थी। स्थिर, शांत परन्तु किसी गहरी झील

जैसा प्यार उनके बीच पाया जाने लगा था। उसी के कारण जीवन में सार्थकता आ गई थी। इंसान का शरीर भूखा नहीं होता, भूखी तो उसकी आत्मा होती है।³¹ अगर पति कुछ काम करता है, कमाता है तो उसकी अपनी पहचान होती है। यहाँ तक कि घर में भी उसका मान-सम्मान होता है। जो कुछ नहीं करते उन्हें दुत्कार मिलती है। 'हानूश' नाटक में कात्या स्पष्ट मना करती है कि उसका पति कुछ कमाता तो है नहीं, मैं उसकी इज्जत नहीं कर सकती। इसी उपन्यास की पंक्तियाँ हैं, 'कामयाब हो जाओगे हानूश, तो तुम्हारी पत्नी भी तुम्हारी इज्जत करेगी। जो लोग कामयाब नहीं होते उनकी पत्नियाँ सबसे ज्यादा उन्हें दुत्कारती है। माफ करना कात्या जी, मैं सिर्फ तुम्हारी बात नहीं कर रहा हूँ। यह दुनिया का दस्तूर है।' ³²

इस प्रकार साहनी जी ने अपने साहित्य में पति-पत्नी सम्बन्धों का वर्णन किया है। जिसमें हर पहलू पर अपने विचार किया है।

निष्कर्ष:

साहनी जी के साहित्य में समाज का वास्तविक एवं यथार्थ चित्रण मिलता है। समाज में नारी स्वतन्त्रता आज भी एक प्रश्न बना हुआ है। नारी घुटन एवं विवशता भरा जीवन व्यतीत करने को मजबूर है। त्याग, क्षमाशीलता, सहानुभूति नारी के ऐसे गुण हैं जो उसको पुरुषों से श्रेष्ठ बनाते हैं। परन्तु पुरुष प्रधान समाज में निम्न वर्ग, मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग, सभी में पुरुषों पर निर्भर होना पड़ता है या फिर उनके शोषण का शिकार होना पड़ता है। पारिवारिक चेतना के अंतर्गत एकांगी और संयुक्त परिवार में भी नारी परिवार की खुशी के लिए सर्वस्व कुर्बान कर देती है। अपनी खुशियों और इच्छाओं का दमन कर लेती है। वास्तव में नारी का समाज में, परिवार में, अतुलनीय योगदान रहता है। उसके बिना परिवार, समाज की कल्पना नहीं की जा सकती।

संदर्भ सूची:

1. डॉ. अच्युतानन्द घिल्डियाल, प्राचीन भारतीय सामाजिक संस्थाएं, पृ. 159
2. डॉ. जानवती अरोड़ा, समसामयिक हिन्दी कहानी में बदलते पारिवारिक संबंध, पृ. 73
3. वही, पृ. 75
4. डॉ. अच्युतानन्द घिल्डियाल, प्राचीन भारतीय सामाजिक संस्थाएं, पृ. 159

5. भीष्म साहनी, पहला पाठ, पाप-पुण्य, पृ. 73
6. वही, फूलां, पृ. 99
7. वही, वाघ्यू, पिकनिक, पृ. 51
8. भीष्म साहनी, भाग्य रेखा, गंगो का जाया, पृ. 83
9. वही, शोभायात्रा, खिलौने, पृ. 33
10. वही, भटकती राख, अपने-अपने बच्चे, पृ. 187
11. भीष्म साहनी, पाली, पाली, पृ. 21
12. वही, कड़ियां, पृ. 43
13. ऋग्वेद, मंडल-1, सूक्ता 191, मन्त्र-2
14. भीष्म साहनी, पहला पाठ, चीफ की दावत, पृ. 9
15. वही, भाग्य रेखा, घर की इज्जत, पृ. 121
16. भीष्म साहनी, शोभायात्रा, लीला नन्दलाल की, पृ. 117
17. वही, भटकती राख, खून का रिश्ता, पृ. 45
18. वही, पाली, आवाजें, पृ. 108
19. वही, कुंतो, पृ. 138
20. भीष्म साहनी, कुंतो, पृ. 231
21. वही, मययादास की माड़ी, पृ. 284
22. भीष्म साहनी, पहला पाठ, रानी मेहतो, पृ. 21
23. वही, वाघ्यू, पिकनिक, पृ. 52
24. वही, भाग्य रेखा, शिष्टाचार, पृ. 31
25. वही, शोभायात्रा, लीला नन्दलाल की, पृ. 115
26. भीष्म साहनी, भटकती राख, एक रोमांटिक कहानी, पृ. 95-96
27. वही, निशाचर, दिवास्वप्न, पृ. 104

28. वही, कड़ियां, पृ. 112
29. भीष्म साहनी, कुंतो, पृ. 229
30. वही, तमस, पृ. 106
31. भीष्म साहनी, मययादास की माड़ी, पृ. 309
32. वही, हानूश, पृ. 17

Corresponding Author

Promila*

PhD Scholar, Department of Hindi, OPJS University,
Churu, Rajasthan